# अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

## एक बूँद

ज्यों निकल कर बादलों की गोद से
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह! क्यों घर छोड़कर मैं यों कढ़ी?

देव!! मेरे भाग्य में क्या है बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में?
या जलूँगी फिर अंगारे पर किसी,
चू पड़ूँगी या कमल के फूल में?

बह गयी उस काल एक ऐसी हवा
वह समुन्दर ओर आई अनमनी
एक सुन्दर सीप का मुँह था खुला
वह उसी में जा पड़ी मोती बनी।

लोग यों ही हैं झिझकते, सोचते
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर
किन्तु घर का छोड़ना अक्सर उन्हें
बूँद लौं कुछ और ही देता है कर।

## चूँ चूँ चूँ म्याऊँ म्याऊँ म्याऊँ

चूँ-चूँ चूँ-चूँ चूहा बोले,
म्याऊँ म्याऊँ बिल्ली।
ती-ती, ती-ती कीरा बोले,
झीं-झीं झीं-झीं झिल्ली।
किट-किट-किट बिस्तुइया बोले,
किर-किर-किर गिलहैरी।
तुन-तुन-तुन इकतारा बोले,
पी-पी-पी, पिपहैरी।
टन-टन टन-टन घंटी बोले,
ठन-ठन-ठन्न रुपैया।
बछड़ा देखे बां-बां बोले,
तेरी प्यारी गइया।
ठनक-ठनक कर तबला बोले,
डिम-डिम डिम-डिम डौंडी।

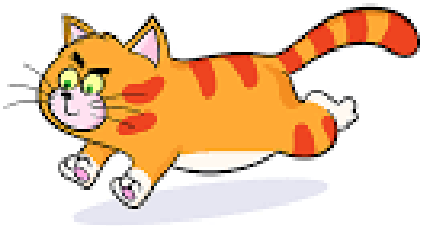

 ISSN:2583-8849